ख्याल

डॉ. अरविन्द कुमार मीणा

'ख्याल' शब्द का अर्थ एवं उसका स्वरूप

'ख्याल' फारसी भाषा का शब्द है। 'ख्याल' शब्द का अर्थ 'विचार', 'सोचना', 'कल्पना', 'ध्यान देना', 'खेल' आदि हैं। 'ख्याल' शब्द लोकभाषा का एक परम्परागत शब्द है। "खेल, तमाशा अथवा मनोरंजन आदि के कारण इस लोकनाट्य का नाम ख्याल पड़ा है"[1] ख्याल शब्द हिन्दी के भक्ति साहित्य में बहुत पहले ही सार्थकता प्राप्त कर चुका था। जनपदीय प्रभाव के बावजूद प्रत्येक प्रकार के ख्याल का संगत एक ही प्रकार का होता है। लावणी की होड़, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता के साथ-साथ जब विभिन्न क्षेत्र के लोकनाट्य-मंचों से इसका जुड़ाव बना तो लावनी के साथ-साथ 'ख्याल' नाम अधिक प्रचार में आ गया।"[2] राजस्थान के साथ-साथ उत्तर प्रदेश में भी भगत, स्वांग आदि में भी 'ख्याल' शब्द को ही सार्थकता प्राप्त हुई है।

"लोकनाट्य का वह रूप जो परंपरागत बंधी-बंधाई रंगशैली में लोकजीवन में प्रचलित आख्यानों का प्रदर्शन कर सामान्य जनता का मनोरंजन करता है, ख्याल कहलाता है।"[3] अक्सर कुछ विद्वान 'ख्याल' शब्द को लावनी से जोड़कर देखते हैं। इसका मुख्य कारण-लावनी जब मात्र गायन की विधा रही तो इसे 'लावनी' कहा गया है किन्तु जब यह गायन और खेल प्रस्तुति की दृष्टि से मंच से जुड़ी तो 'ख्याल' नाम ज्यादा प्रचलित हुआ। इसलिए बहुत से विद्वान इसे केवल 'लावनी' या ख्याल' न कहकर 'ख्याल-लावनी' एक साथ कहते हैं।"[4] वस्तुतः ख्याल कल्पना और विचारों से उत्पन्न कवित्व रचना का ही दूसरा नाम है, लेकिन जब से यह रंगमंच पर खेल तमाशों का रूप धारण करने लगा है तभी से यह खेल अथवा ख्याल के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

ख्याल के प्राचीन स्वरूप पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि मध्यकाल में ख्याल एक अविकसित एवं शास्त्रीय संगीत की अन्य शैलियों से प्रभावित सीधी, सरल एवं ईश्वर से संबंधित भक्तिपूर्ण शैली थी, जिसमें अल्लाह, रसूल, पीर तथा धार्मिक पुरुषों आदि से संबंधित विषय-वस्तु हुआ करती थी।

ख्याल के वर्तमान स्वरूप को देखने से ज्ञात होता है कि अब यह केवल श्रृंगारिक प्रसंगों के लिए ही नहीं रह गई है अपितु ऋतु वर्णन, ईश्वरस्तुति, राजस्तुति, नीति, कृष्ण लीला, विवाह प्रसंग, वीरता, संगीत संबंधित सिद्धांत विषय आदि से युक्त प्रसंगों को लेकर भी इनकी रचनाएं की गईं हैं। आधुनिक समय में ख्याल का स्वरूप पूर्णतः स्पष्ट है। "ख्याल गेय काव्य है, अतः इसकी रचना गेयता को ध्यान में रखकर की जाती

है। इसके अनेक छंद और धुने हैं।"[5] ख्याल के वर्तमान स्वरूप पर अनेक पीढ़ियों, शैलियों तथा सभ्यताओं का प्रभाव पड़ा है। इसी कारण इसमें एक विशेष प्रकार का आकर्षण, लचीलापन तथा सौन्दर्य निहित है।

ख्याल परपंरा ख्यालों की यह परपंरा हिन्दी में मराठी से आई और मराठी में केरल से। इस प्रकार देखा जाये तो ख्यालों की यह परपंरा मूलतः केरल की है। यह परपंरा लगभग 300-400 वर्ष पुरानी है। विद्वानों ने इसका आरंभ 1700 ई0 के आस-पास माना है। ख्याल लोकनाट्य की परपंरा की शुरूआत किसके द्वारा और कब की गई यह तो निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है, परन्तु 14वीं शताब्दी के अन्त में या 15वीं शताब्दी के आरंभ में स्वाँग शैली का आरंभ हो चुका था। इसी ने आगे चलकर ख्याल की परपंरा को जन्म दिया। ख्याल को स्वाँग का ही रूप माना गया है। रामनारायण अग्रवाल लिखते है- "एक ओर जहाँ वे दंगलों में चंग लेकर ख्याल गाते थे वहाँ दूसरी ओर मंच के माध्यम से भी अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। ख्याल के इस मंच का स्वतंत्र विकास संवत् 1809 अर्थात सन् 1752 के आस-पास हो चुका था।"[6]

वर्तमान में ख्याल राजस्थान में अपने पूर्ण कलात्मक स्वरूप के साथ विद्यमान है। देवीलाल सामर लिखते हैं- "सत्रहवीं शताब्दी में आगरा के निकट ख्यालों की एक लोकधर्मी परम्परा शुरू हुई, जिसका दायरा केवल काव्य-रचना तथा ऐतिहासिक तथा पौराणिक व्यक्ति से संबंधित काव्य-रचना की प्रतियोगिता तक ही सीमित था। यही परम्परा प्रथम बार 18वीं शताब्दी में राजस्थान के रंगमंचीय ख्यालों के रूप में परिवर्तित हुई जो आज अनेक रूपों में राजस्थान के जनजीवन को आह्लादित कर रही है।"[7] आगरा से आरम्भ होकर यह विधा ब्रज क्षेत्र से सटे हुए राजस्थान के करौली, हिण्डोन, भरतपुर आदि में पहुँची फिर यहीं से सम्पूर्ण राजस्थान में फैली और यहाँ के मुख्य लोकनाट्य के रूप में प्रसिद्ध हुई। राजस्थान में ख्यालों की परम्परा लगभग 300 वर्ष पुरानी है। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, पंजाब आदि में भी यह विधा विद्यमान है और इसे अलग-अलग नामों से यहाँ पुकारा जाता है। "ख्याल मंच विविध नाम और रूपों में मध्यप्रदेश से पंजाब तक लोक-जीवन में रम गया, परन्तु ख्याल नाम से यह मंच राजस्थान में सर्वाधिक प्रचलित है।"[8]

अखाड़ों की परम्परा सामान्यतः 'अखाड़ा' शब्द पहलवानी के क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है। पहले संतो के भी अपने अखाड़े हुआ करते थे। तुकनगिरि और शाहअली नामक दो संतों ने भी अपनी मंड़ली अथवा संगठन को सर्वप्रथम अखाड़ा नाम दिया। इनकी देखा- देखी आगे चलकर 'अखाड़ा' शब्द गाने-बजाने वालों की मंडलियों के लिए प्रयोग होने लगा। समय के साथ-साथ पहलवानी अखाड़ों के शब्द और परम्पराएं भी इन गाने-बजाने वालों के अखाड़ों ने ग्रहण कर ली। हिन्दी भाषा क्षेत्र में शायद मध्यप्रदेश में ये सर्वप्रथम स्थापित हुए होंगे। राजस्थान में इनको विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हुई। तुकनगिरि के शिष्य लक्ष्मणगिरि को राजस्थान के ख्याल परम्परा के प्रचार-प्रसार का श्रेय दिया जाता है। राजस्थान में ख्याल के मंचीय प्रदर्शन तो बाद में आरंभ हुए, यहाँ पहले से ही तुर्रा-कलंगी के अखाड़े स्थापित हो चुके थे। राजस्थान में सबसे पहले चित्तौड़ में गौड़ ब्राह्मण सहेडुसिंह ने तुर्रा ख्यालों का अखाड़ा स्थापित किया। घोसुंडा का कलंगी अखाड़ा सबसे पुराना माना जाता है। उसके बाद जयपुर, अजमेर, किशनगढ़, करौली, भरतपुर, निम्बाहेड़ा,

पाटन आदि में भी ख्याल गायकी के अनेक अखाड़े स्थापित होने लगे। राजस्थान के बाहर मध्य प्रदेश के मंदसौर एवं जावरा और उत्तर प्रदेशमें आगरा, कानपुर, बनारस, इलाहाबाद आदि में भी अनेक अखाड़े स्थापित हुए।

ख्यालों की कथावस्तु- दैनिक जीवन की कोई भी घटना ख्याल की कथा-वस्तु बन सकती है। यह किसी भी वर्ग या वर्ण से संबंधित हो सकती है। अध्ययन की दृष्टि से ख्याल की कथा-वस्तु को मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. ऐतिहासिक ख्याल

2. सामाजिक ख्याल

3. धार्मिक ख्याल

4. श्रृंगारिक काल

1. **ऐतिहासिक ख्याल**- राजस्थान में ख्यालों की अनेक वीर-कथाएँ हमें देखने को मिलती हैं। "इन कथानकों में वीर विक्रमादित्य, अमरसिंह राठौर, पाबूजी, गोगाजी चौहान, देवनारायणजी, रामदेवजी, डूॅंगजी, जुहारजी, धावड़ी दयाराम धावड़ी आदि के ख्याल बहुत प्रसिद्ध हैं। कड़ा ख्याल में महाराज पृथ्वीराज का चरित्र विशेषरूप से बहुत लोकप्रिय रहा है।"[9]

राजस्थान के कवियों और भाटो ने वीरता, आत्मबलिदान, वचन, जैसी उच्च मनोवृतियों को अपनी रचनाओं में जीवित रखा है। परन्तु राजस्थान के ख्यालों की विषेशता यह रही है कि "राजस्थान के 'ख्याल' नाट्यों में उन इतिहास प्रसिद्ध राजपूत राजाओं की कथाएँ कम हैं, जिनका गुणगान राजदरबार के भाटों ने किया है। ऐसा जान पड़ता है कि सामान्यतः दर्शकों में उन वीरों की कथाओं में अधिक अभिरूचि दिखाई, जो निर्धन और दलित जातियों की सेवा के कारण विख्यात हो गये।"[10] तेजाजी और राजा भरथरी ऐसे ही वीर थे। इन दोनों वीरों और अन्य वीरों से संबंधित ख्याल राजस्थान की जनता द्वारा बड़ी रूचि से देखे जाते हैं।

2. **सामाजिक ख्याल-** सामाजिक ख्यालों में पारम्परिक गीतों के माध्यम से दैनंदिन सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है। "सामाजिक ख्यालों में समाज में व्याप्त कुरीतियों को बड़े रोचक ढंग से हास्य और व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया जाता है। अनमेल विवाह, नशाखोरी, नाजायज संबंध आदि विषयों पर यह ख्याल खेले जाते हैं। 'मस्तपरी', 'नने खशम', 'काकी जेठूत', 'छोटा बालम', 'खटपटिया', 'नशाबाज', आदि

ख्याल बहुत प्रसिद्ध हैं।''[11] सामाजिक ख्यालों में हास्यरस की प्रधानता होती है, जिस कारण दर्शक अपनी थकान और ऊब को भूलाकर नाट्यरस में सराबोर होकर रात-रात भर ख्याल देखता रहता है।

3. **धार्मिक ख्याल**- अनेक ख्यालों के कथानक धार्मिक पौराणिक कथाओं से भी लिए गए है। 'रामायण', 'महाभारत', 'पुराण', आदि इस प्रकार के ख्यालों के आधार रहे हैं। धार्मिक ख्यालों में 'ध्रुवचरित्र', 'राजा हरिश्चन्द्र', 'पूरनमल', 'भरथरी-पिंगला', 'रूक्मिणि-मंगल', 'सती हेमकुंवर', 'नल दमयंती', 'कृष्ण- सुदामा', 'द्रौपदी स्वयंवर', 'नरसी मेहता', 'चंदामिलियागिरी', 'आनंद गणपति', 'मीरा-मंगल', 'गोपीचंद' आदि बहुत प्रसिद्ध हैं।"[12]

4. **श्रृंगारिक ख्याल-** श्रृंगारिक ख्यालों में नायक-नायिका के संयोग और वियोग दोनों पक्षों को दर्शाया गया है। ख्यालों में कथानक कहीं से भी लिये जाएं, श्रृंगारिक तत्वों को प्रधानता दी जाती है। वीर नायकों की कहानियों में प्रेम-भावों को ही अभिव्यक्ति दी जाती है।"[13] सभी श्रृंगारिक ख्याल एक जैसे नहीं होते परन्तु फिर भी यह कहना गलत न होगा कि "ख्याल या लावनी में सबसे अधिक अगर लिखा गया तो वह इश्क के बारे में। यह इश्क लौकिक भी है और पारलौकिक भी।''[14] 'लैला-मजनू', 'हीर- राँझा', 'इश्कबाज पनवाड़ी', 'छैला दिलजान', 'पद्मावत्', 'राजा रिसालू', 'सुलतान निहालदे', 'सोहनी महीवाल', 'ढोला-मारू', आदि श्रृंगारिक ख्यालों के मुख्य उदाहरण हैं।

ख्याल के चारों प्रकार को देखने के बाद कहा जा सकता है कि इनकी कथावस्तु मुख्य रूप से लोक जीवन से जुड़ी हुई है। कथावस्तु में बिखराव के बावजूद संगीत और कलाकारों का प्रदर्शन इतना प्रभावशाली होता है कि दर्शक रात-रात भर बैठकर ख्याल देखकर अपना मनोरंजन करता है और कहीं ना कहीं अपना जुड़ाव ख्यालों से बनाए रखता है।

ख्यालों की विभिन्न शैलियाँ राजस्थान के अलावा उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और पंजाब में जनपदीय ढंग के ख्यालों की अनेक शैलियाँ पाई जाती हैं-

1. शेखावटी ख्यालः शेखावटी ख्याल के मुख्य प्रवर्तक फतेहपुर निवासी प्रहलादीराम झालीराम पुरोहित हैं। इसके मुख्य लेखक नानूराणा थे। शेखावटी क्षेत्र (जिला- सिकर, झुंझुन और चुरू) का यह स्थल मुख्य रूप से गीत-संगीत के लिए जाना जाता है। गीत संगीत को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सारंगी, ढोलक, हारमोनियम, नगाड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है। "ये ख्याल मांड, चन्द्रावती, घूमनी, काफी, बरवा, जैजैवंती, परज, भैरवी, कालंगड़ी, आसावरी, खड़ी टोड़ी, खड़ी भैरवी, जानवी, सिंधु, सोरठ, ठुमरी बरवा, कलाली, कडरवा, धानी आदि की बहुलता लिये होते हैं। चौवोला के साथ इसमें ताल लगाई जाती है। खेल समाप्ति पर भैरू की स्तुति की जाती है।"[15]

2. चिड़ावी ख्यालः झुंझुनू जिले के चिड़ावा कस्बे के नानू राणा को चिडावी ख्याल का जन्मदाता माना जाता है। वेषभूषा साधारण रहते हुए भी इस ख्याल की मुख्य विशेषता शास्त्रियों रंगों की रंगते हैं। विभिन्न दोहे विशेष प्रकार के तालों पर गाये जाते हैं। नृत्य बहुत मुश्किल परन्तु अपनी विशिष्टता लिये हुए होता है।

3. मेवाड़ी ख्यालः कोमलता लिए हुए मेवाड़ी ख्याल अपनी वेशभूषा की रंगीनियों और कलात्मकता के लिए जानी जाती है। कोई विशिष्ट मंच न होने के बावजूद "किन्हीं विशेष तरह के ख्यालों के मंच के रूप में शानदार मेड़ी बनाई जाती है जहाँ से स्त्री-पात्र टेरे देता हुआ नीचे मुख्य मंच पर आता है।"[16] इस ख्याल का नृत्य और अभिनय अपनी विशिष्टता लिए हुए होता है।

4. जयपुरी ख्यालः राग रागनियों प्रधान जयपुरी ख्याल का अपना कोई मंच नही होता। नीचे जमीन पर दरी बिछाकर ही ये अपना नाट्य प्रदर्शन कर देते हैं। इस ख्याल में वंशीधर जी के ख्यालों का मंचन मुख्य रूप से किया जाता है।

5. मारवाड़ी ख्यालः उगमराजी को मारवाड़ी ख्याल के प्रचलन का श्रेय दिया जाता है। यह ख्याल अपने गीत-संगीत के लिए प्रसिद्ध है। सभी अभिनेता और संगीत कलाकार मंच पर बैठे रहते है। अपनी अभिनय कला की बारी आने पर ही उठते-बैठते रहते हैं। स्त्रियों की भूमिका पुरूष ही निभाते हैं। ऐसे पुरूष स्त्री की वेशभूषा में रहते हैं। 'गोगा चव्हाण' मारवाड़ी ख्याल की प्रमुख प्रस्तुति है।

6. नागौरी ख्यालः नागौर जिले के ख्यालों में दोहा, कवित्त, गजल, पवाड़ा, झूलणा आदि छंदों का गठन होता है।"इन ख्यालों की रंगते सीधी तथा सजीव होती हैं। गजलों में नारी के रूप-सौन्दर्य का वर्णन अधिक मिलता है। रूप-सौन्दर्य की उपमाएं यद्यपि परम्परागत उपमानों के आधार पर ही मिलती हैं यद्यपि उनका कथनीकरण अपने ढंग का अनोखा रहता है।''[17] नागौरी ख्यालों में छंदो में विविधता का अभाव पाया जाता है।

7. माच के ख्यालः माच की उत्स भूमि उज्जयिनी रही है। खुले रंगमंच की यह शैली आमतौर पर गर्मी के मौसम में गांवों और शहरों में आयोजित की जाती है। इनको प्रदर्शित करने के लिए "मंच के बांए कोने में सजिन्दे अर्थात ढ़ोलक, सारंगी और हारमोनियम वाहक बैठते हैं। ढ़ोलक माच का प्राण है। गायक कलाकारों को बोल और नर्तन व टेक झेलने वालों के सामूहिक स्वर संगीत ढ़ोलक की गत पर चलते हैं। जिस तरह नौटंकी में नगाड़ा और कत्थकली में चेड़ा वाद्य की आवाज खानगी पैदा करती है

उसी तरह माच में ढोलक की थाप खानगी और गत प्रस्तुति में प्राण फूंक देती हैं।"[18] राजा हरिश्चद्र, राजा भरथरी, ढोला मारूणी, हीर-रांझा, गेंदपरी आदि माच के ख्याल की प्रमुख प्रस्तुतियाँ रही हैं।

8. किशनगढ़ी ख्यालः किशनगढ़ क्षेत्र का यह ख्याल गेय प्रधान है। रागों की विविधता लिए हुए इस ख्याल का नृत्य पक्ष कुछ कमजोर नज़र आता है जबकि इसका कला पक्ष मजबूत है। वेशभूषा चमकीली तथा भव्य मंडल इसमें पाए जाते हैं।

9. तुर्रा कलंगी ख्यालः तुकनगीर और शाहअली नाम के संतो को इस ख्याल का प्रवर्तक माना जाता है। 'रूपवसंत', 'राजा हरिशचंद्र', 'मोरध्वज', 'ध्रुव', 'निहालदे सुलतान', 'राजा भरथरी', 'गोपीचन्द्र', 'तुर्रा कलंगी' का विवाह आदि इस ख्याल के मुख्य उदाहरण हैं।

10. कुचामणी ख्यालः राजस्थान के नागौर जिले का कुचामन शहर इस ख्याल का उद्गम स्थल माना जाता है। पंडित लक्ष्छीराम को इस ख्याल का प्रवर्तक कहा जाता है। इसका रूप ऑपेरा जैसा है। दोहा, कवित्त, सोरठा, छप्पय आदि में रचित ख्यालों में लोकगीतों की लोकप्रिय धुनों का प्रयोग किया जाता है। नृत्य में ताल लय के अनुसार होती है। "इसमें प्रायः नर्तक ही गाने गाते हैं लेकिन जब नर्तक की सांस उखड़ जाती है तो मंच पर बैठे अन्य सहयोगी गायक गायन जारी रखते हैं।"[19] हास्य रस से परिपूर्ण इस ख्याल की भाषा कुचामणी से प्रभावित उर्दू-मिश्रित हिन्दी होती है।

11. बैठकी ख्यालः संयुक्त रूप से बैठकर काव्यमूलक प्रदर्शन आगे चलकर बैठकी ख्याल के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसमें 'कलमबंध', 'चित्रबंध', 'नागफास', 'जंजीरे', 'तीस हर्फी, 'शट हर्फी' आदि ख्यालों का बोलबाला रहा।

12. अलीबक्षी ख्यालः मंडावर के अलीबक्ष इस ख्याल के प्रवर्तक रहे हैं। राजस्थान के अलवर जिले में प्रसिद्ध इस ख्याल में लंगड़ी, कड़ी, गजल, भजन आदि गाये जाते हैं। 'पद्मावत', 'कृष्णलीला', 'महाराज शिवदानसिंह' का बारहमासा, अलवर का शिफ्टनामा आदि इस ख्याल के मुख्य उदाहरण हैं।

13. हाथरसी ख्यालः नत्थाराम इस ख्याल के जनक कहे जाते हैं। "ये ख्याल अपनी सरल गायकी तथा सीधे सादे नृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें ताल बोल के बाद लगाई जाती है। पद के साथ साथ ये

गद्य में भी लिखे जाते हैं। घुंघरू का प्रयोग केवल स्त्री पात्रों में ही किया जाता है।"[20] राजस्थान के भरतपुर और धौलपुर जिले में यह ख्याल बहुत प्रसिद्ध रहा है।

14. रम्मत ख्यालः रम्मत ख्याल बीकानेर और जैसलमेर जिलों में अभिनीत होता रहा है। इसका प्रदर्शन फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से चतुर्दशी तक किया जाता है। तेज कवि रम्मत ख्याल के प्रमुख लेखक रहे हैं। इस ख्याल में तख्तों के मंच पर बांस की बल्लियों से छतरीनुमा महल बनाया जाता है। यह स्थान कलाकारों के बैठने के लिए प्रयुक्त होता है। जिस कलाकार का अभिनय होता है वह उठकर अभिनय करता है तत्पश्चात् पुनः अपना स्थान ग्रहण कर लेता है।

15. चौबोला ख्यालः चार प्रकार की गायकी के कारण इस ख्याल को चौबोला ख्याल कहा जाता है। बीकानेर के इस ख्याल में संवाद प्रधान रहते हैं। 'गोपीचंद्र', 'भरथरी पिंगला, 'भक्त प्रहलाद', 'लैला मजनू' आदि इसके प्रमुख ख्याल हैं।

उपर्युक्त ख्यालों के अतिरिक्त गंधर्वों का ख्याल, कड़ा ख्याल दंगली ख्याल, डोड़िया ख्याल, अभिनयी ख्याल, कथावाचनी ख्याल कठपुतली खेल, नटों के खेल आदि भी राजस्थान में दर्शकों द्वारा देखे एवं पसंद किये जाते रहे हैं।

ख्यालों में संगीत एवं वाद्य यंत्र "लावनी" जब मात्र गायन की विधा रही तो इसे 'लावनी' कहा गया किन्तु जब यह गायन और खेल की प्रस्तुति की दृष्टि से मंच से जुड़ी, तो 'ख्याल' नाम ज्यादा प्रचलित हुआ।"[21] ' संगीत से लोकनाट्यों की रोचकता और प्रभावोत्पादकता और अधिक बढ़ जाती है। "राजस्थानी ख्याल संगीत प्रधान लोकनाट्य है, इसमें संगीत, नृत्य और नाटक का सम्मिश्रण होता है और गायन की प्रधानता रही है। ख्याल गेय है और विविध राग-रागनियों में लिखे जाते हैं जिन्हें रंगत कहते हैं।"[22] राजस्थान के ख्यालों में लोकधुनों का खूब प्रयोग किया जाता है। टोड़ी, कलिंगड़ा, भैरवी, सोरठा, सोहनी, विहाग, झिझोटी, जैजैवंती, देश, धनाश्री, मास आदि रागों का भी अवसरानुकूल प्रयोग किया जाता रहा है। ख्याल में गीत संगीत की भूमिका का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 'मीरा- मंगल', 'ढोला-मारू', 'हीर रांझा' जैसे प्रसिद्ध ख्यालों की रचना केवल और केवल गीत-संगीत के लिए ही की गई थी।

ख्याल में गायकी और नृत्य अत्यंत श्रमसाध्य है"[23] अपने गीत-संगीत को अधिक प्रभावी बनाने के लिए ख्यालों में अनेक वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता रहा है। नगाड़ा, ढोलक, मंजीरा, हारमोनियम, ख्याल

के मुख्य मंत्र हैं। नगाड़े के विषय में डा. रमा लिखती हैं कि "नगाड़े का स्वर बड़ी दूर-दूर से दर्शक समाज को खींच लाता है।"[24] उपर्युक्त वाद्य-यंत्रों के अतिरिक्त चंग, सारंगी, सेनाई (शहनाई), वायलिन आदि भी ख्याल के मुख्य यंत्र है।

मंच विधान- ख्यालों के मंच भव्यता से दूर साधारण, सहज और सरल होते हैं। आमतौर पर ये ग्रामवासियों के संयुक्त सहयोग से तैयार किए जाते हैं। ये मुख्य रूप से चतुर्मुखी, त्रिमुखी, अट्टालिका और सीढ़ीदार होते हैं। "ख्याल का रंगमच केवल एक ऊँचा चबूतरा मात्र होता है। यह चारों ओर से खुला रहता है। दर्शक मंच के चारों ओर धरती पर बैठते हैं।"[25] ख्याल के मंच साधारण होते हैं परन्तु अट्टालिका मंच अपनी भव्यता के लिए जाने जाते हैं। "भूमि से लगभग 8 फुट ऊँचे बनाये जाने वाले इन कलात्मक मंचों के कारण ही वहाँ इन ख्यालों को मांच नाम दिया गया था।"[26] ख्याल के मंच प्रायः मन्दिर के पास ही बनाये जाते हैं।

ख्यालों की भाषा ख्यालों की भाषा सहज और सरल होती है। ख्यालों का मुख्य उद्देय लोकजीवन का मनोरंजन करना है, इसी कारण ख्यालों में लोकभाषा को ही अधिक महत्व दिया जाता है। मुख्यतः राजस्थान से संबंध होने के कारण "ख्यालों की भाषा राजस्थानी होती है। लोक प्रचलित शब्द और तीखापन तथा व्यंग्यात्मकता इस भाषा की विशेषता है। विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित होने के कारण ख्याल गीतों में आस-पास की भाषाओं के शब्द भी मिल गये और इसी से उनका काफी सरलीकरण हो गया है। परन्तु भाषा शैली बड़ी मधुर और आकर्षक होती है।"[27] ख्याल की भाषा में क्षेत्रीय प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। "मेवाड़ी, मारवाड़ी, हाड़ोती, जयपुरी, ढूँढारी आदि बोलियों का इन ख्यालों में विशेष रूप से प्रयोग होता है। कुचामड़ी और शेखावटी ख्याल में जो राजस्थान में सर्वाधिक प्रसिद्ध व लोकप्रिय है- कुचामड़ी व शेखावटी की बोलियों का प्रयोग होता है। वैसे ख्यालों में कहीं-कहीं संस्कृत, अंग्रेजी आदि का भी आंशिक प्रयोग देखा जाता है। हिन्दुस्तानी खिचड़ी भाषा तथा उर्दू का प्रयोग भी कहीं-कहीं होता है।"[28] राजस्थानी के अतिरिक्त ब्रज और अवधी का प्रयोग भी हमें देखने को मिलता है।

ख्याल के रचनाकार गीतिनाट्यों पर आधारित लोकनाट्य ख्याल के अनेक रचनाकार हुए हैं। इनमें गुरू गोपाल जी, बालमुकुन्द गुरू, अलीबक्ष, लक्ष्छीराम, नानूलाल राणा, तेज कवि, गिरिराज, भूरीलाल, नत्थाराम, दुलिया राणा आदि प्रमुख रहें हैं।

ख्याल की वर्तमान स्थिति वर्तमान में ख्याल की यह लोकनाट्य परम्परा राजस्थान में व्यापक और पंजाब में आंशिक रूप से तुर्रा कलंगी के रूप में विद्यमान है। शुरुआत में ग्रामीणों के आपसी सहयोग से ख्याल के प्रदर्शन होते थे। तत्पश्चात् व्यावसायिक मंडलियों का गठन होने लगा। इन मंडलियों में शेखावटी, कुचामणी ख्याल अधिक प्रसिद्ध हुए। परन्तु अन्य रंगमंचीय विधाओं की भाँति ख्याल परम्परा भी धूमिल हो रही है। "ख्याल" परम्परा अपने कलात्मक वैभव को खो रही है और यदि उसे सही दिशा नहीं मिलती तो वह शीघ्र ही अतीत की वस्तु बन जायेगी। तुर्रा कलंगी की परम्परा भी अब लगभग इसी अधोगति को प्राप्त करने के बाद समाप्त सी हो रही है। अलीबक्षी ख्यालों को भी अब इतिहास की वस्तु मानना होगा, क्योंक अब इन ख्यालों का प्रदर्शन करने वाले दल राजस्थान में कहीं नहीं है। विद्यमान ख्याल नाटक अपना कला-वैभव, परम्परा, पोशाकों, संगीत व नृत्य की अत्यंत समृद्ध परम्परा के स्थान पर अश्लीलता से नाता जोड़ रहे हैं। ऐसी दशा में यह परम्परा कब तक जीवित रह सकेगी यह एक प्रश्न है।"[29] माच, भगत, स्वाँग, नौटंकी आदि की भाँति ख्याल भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। टी.वी., सिनेमा, मोबाईल, इन्टरनेट आदि के कारण हमारी लोकनाट्य विधाओं पर दोहरी मार पड़ी है। बढ़ता शहरीकरण भी हमारी लोकनाट्य विधाओं पर कड़ा प्रहार कर रहा है।

ख्याल के विस्तार में विकास के लिए यह आवश्यक है कि इस परम्पराशील नाट्यरूप की प्रवृत्तियों का अध्ययन, विश्लेषण और परीक्षण किया जाये। इसके संरक्षण कार्य में संवेदनशील, लोकरंग से जुड़े हुए विद्वानों को नियोजित किया जाये। केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारें इस विधा को संरक्षण प्रदान कर सकती हैं। विभिन्न संगीत नाटक अकादमियाँ ख्याल मंडलियों को यथा संभव मदद करें। तभी जाकर ये नाट्य मंडलियाँ जनसाधारण को अपनी ओर आकृष्ट कर, उनका मनोरंजन कर पायेंगी।

सन्दर्भः

1. भारतीय लोकनाट्य, डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, पृ0-16

2. रंगमचः लोकधर्मी, नाट्यधर्मी, पृ0-23

3. भारतीय लोकनाट्य, डॉ वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, पृ0-16

4. भारतीय लोकनाट्य, डॉ. महेन्द्र भानावत, पृ०-68

5. हिंदी की ख्याल लावनी परम्परा, रामनारायण अग्रवाल, पृ०-64

6. वही, पृ०-100

7. भारतीय लोकनाट्य, डॉ. महेन्द्र भानावत, पृ०-68

8. हिंदी की ख्याल लावनी परम्परा, रामनारायण अग्रवाल, पृ0-111

9. वही, पृ0-113

10. परम्पराशील नाट्य, श्री जगदीशचन्द्र माथुर, पृ॰-40

11. हिंदी की ख्याल लावनी परम्परा, रामनारायण अग्रवाल, पृ0-114

12. वही, पृ॰-117

13. हिन्दी रंगमंच, डॉ. रमा, पृ॰-83

14. हिंदी नाटक और रंगमंच, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, पृ॰-82

15. भारतीय लोकनाट्य, डॉ. महेन्द्र भानावत, पृ॰-89

16. वही, पृ॰-96

17. वही, पृ0-141

18. लेख-मालवा का लोकनाट्य माच, अभिव्यक्ति, स्रोत-इन्टरनेट, डॉ. शिवकुमार माथुर

19. राजस्थान के लोक नाट्य 'कुचामनी ख्याल', स्त्रोत- इंटरनेट

20. भारतीय लोकनाट्य, डॉ. महेन्द्र भानावत, पृ0-140

21. हिंदी नाटक और रंगमंच, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, पृ0-82

22. हिन्दी रंगमंच, डॉ. रमा, पृ0-82

23. रंगमंच: लोकधर्मी-नाट्यधर्मी, डॉ. लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, पृ॰-23

24. हिन्दी रंगमंच, डॉ. रमा, पृ॰-83

25. वही, पृ0-83

26. हिंदी की ख्याल लावनी परम्परा, रामनारायण अग्रवाल, पृ0-123

27. हिन्दी रंगमंच, डॉ. रमा, पृ॰-84

28. हिंदी की ख्याल लावनी परम्परा, रामनारायण अग्रवाल, पृ॰-120

29. वही, पृ॰-129

-डॉ. अरविन्द कुमार मीणा

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय